आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:03-12-14

हम पतित आत्माओं को अपनी याद से पावन बनाने वाले, निरअहंकारी बाप ने कहा, मीठे बच्चे - याद की यात्रा में अलबेले मत बनो, याद से ही तुम्हारी आत्मा पावन बनेगी. बेहद के बाप आये है सभी आत्माओं की सेवा कर उन्हें शुद्ध बनाने.

भक्ति मार्ग में हम गाते भी है - पतित-पावन सिता-राम. लेकिन वह गाते भी हम आत्माये और ही पतित बनते गये. ऐसे ही शिव के ऊपर जाकर अक का फूल चड़ाते थे लेकिन उसका मतलब भी नहीं जानते थे. आज की सारी मुरली में परमपिता-परमात्मा शिव, पतित-पावन बाप के रुप में हम आत्माओं को कैसे पावन बनाते है उस पर ही समझाया हैं. भक्ति में हम शिव के ऊपर अक के फूल चड़ाते थे क्योंकि हम आत्माये पतित है वही सच्चा पतित-पावन राम हम सब आत्माओं को फिर से पावन बनाता हैं और फिर हमारे लिए पावन दुनिया भी वही रचयिता-बाप रचते है और हमको उसका मालिक बनाते है. तो ऐसे बाप को तो हमें हर क्षण, हर पल याद करना पड़े.

हमारी आत्मिक स्थिति और बाप की याद पक्की करने के लिए आज की मुरली से लिए गये कुछ महा-वाक्यों को फिर से पढ़ेंगे.

- रुहानी बाप रुहानी बच्चों से पुछते हैं - बच्चे, तुम जब यहॉ बैठते हो तो किसको याद करते हो? अपने बेहद के बाप को. उनके लिए ही कहते है ना - हे पतित-पावन अर्थात हम पतितो को पावन बनाने वाले राम आओ. अब तुम जानते हो पावन दुनिया सतयुग को और पतित दुनिया कलियुग को कहा जाता हैं. अभी सब आत्माये कलियुग में है इसलिए पुकारते हैं बाबा आकर हम आत्माओं को पावन बनाओ.

- आत्मा को ही पवित्र बनना है. आत्मा पवित्र बनने से शरीर भी पवित्र मिलता है. आत्मा पतित बनने से शरीर भी पतित मिलता है. यह शरीर तो मिट्टी का पुतला है. आत्मा अविनाशी है. आत्मा ही इन ऑरगन्स द्वारा पुकारती है - हम बहुत पतित बन गये हैं, हम को आकर पावन बनाओ. बाप ही आकर फिर से पावन बनाते है.

- बाप कहते है यह जो मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ है मैं उसका बीजरुप हूँ. मुझे ही तुम बुलाते हो, हे परमपिता-परमात्मा, ओ गॉड फॉदर, लिबरेट मी. बाप ही तुम्हें लिबरेट कर अपने साथ शान्तिधाम ले जाते है. तुम आत्माये वहॉ मूलवतन में बिगर शरीर रहती हो, उसे निराकारी दुनिया कहा जाता है.

- बाप कहते है अभी मैं आया हूँ तुम्हें पावन बनाने. शिवबाबा ही ब्रह्मा द्वारा तुम्हें अभी पढ़ाते हैं. शिवबाबा है आत्माओं का बाप और ब्रह्मा को आदि देव कहते हैं. तुम जानते हो इस दादा में बाप कैसे आते है.

- अब बाप समझाते हैं यह भारत पहले सचखण्ड था. जरूर सच्चे बाप ने स्थापन किया होगा. बाप को ही टुथ कहा जाता है. बाप ही कहते हैं मैं ही इस भारत को सचखण्ड बनाता हूँ. तुम सच्चे देवताये कैसे बन सकते हो, वह भी तुमको सिखलाता हूँ.

- बाबा कहते है बच्चों को पहले-पहले यह निश्चय होना चाहिए कि उन्हें स्वयं परमपिता-परमात्मा पढ़ाते है. यह दादा तो सिंध का रहने वाला था परन्तु इसमें जो प्रवेश कर बोलते हैं, वह है ज्ञान का सागर.

- बाप कहते है मैं तुम्हारी निष्काम सेवा करता हूँ, तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, मैं नहीं बनता हूँ. स्वर्ग में तुम मुझे याद नहीं करते हो. दुख में सिमरण सब करें, सुख में करें न कोय. तो ज्ञानसागर बाप अभी आकर तुम्हें बेसमझदार से समझदार बनाते हैं.

- बाप कहते है तुम जानते हो पतित-पावन बाप आये हुए हैं राजयोग सिखला रहे हैं. अब बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो, विश्व का मालिक बनकर दिखाओ. याद की यात्रा में अलबेले मत बनो.

ॐ शांति.